

पद १४३

(राग: झिंजोटी - ताल: त्रिताल)

भज मन मेंरा रे जानकी रघुबीर ॥ध्रु.॥ राजा दशरथ के कुंवर
कहावे । राहत शरजू के तीर ॥१॥ सागर पर पाषाण जो तारे । उतरे
सब कपिबीर ॥२॥ मानिक के मन ये मत छांड़िये । सुमरत रहो
रणधीर ॥३॥